मरुस्थल में भेड़ विकास

168

प्रसार एवं प्रशिक्षण विभाग,
केन्द्रीय रूक्ष क्षेत्र अनुसंधान संस्थान
जोधपुर (राज.)

ICAR
भाकृअप

प्रसार प्रकाशन क्र.सं. 17
दिसम्बर, 1979

भेड़ों की संख्या, दक्षिण एवं, दक्षिण-पश्चिमी सीमा, से उत्तर, एवं उत्तर-पूर्वीय सीमा तक सबसे अधिक हैं। इन सीमाओं के दोनों ओर भेड़ों की संख्या कम होती जाती है जिसका कारण है कि इस सीमा के पूर्व में फसलें अधिक होती हैं तथा पश्चिम में जमीन एकदम ऊसर है। राजस्थान में पायी जाने वाली भेड़ों में से 45 प्रतिशत भेड़ें केवल जोधपुर संभाग में पायी जाती हैं। नागौर, पाली तथा जोधपुर जिलों में अन्य जिलों की तुलना में सबसे अधिक भेड़े पायी जाती हैं। इस प्रकार इन क्षेत्रों में भेड़-पालन का मुख्य स्थान है। इस प्रपत्र में मरूस्थल में भेड़ पालन संबंधी कुछ मुख्य सावधानियों का वर्णन किया गया है।

भेड़ों में प्रजनन क्रिया

प्रत्येक मादा भेड़ एक से डेढ़ वर्ष की उम्र में बच्चा पैदा करने योग्य हो जाती है। इस उम्र में जब भी भेड़ें गरम होने लगें तब 50 स्वस्थ भेड़ों के रेवड़ में एक उन्नत नस्ल का मेंड़ा छोड़ देना चाहिए। अगर प्रथम बार में गर्भधारण नहीं होता तो प्रत्येक भेड़ पुनः 15 से 18 दिन बाद फिर गर्मी में आती है। इसको भेड़ का ऋतु चक्र कहते हैं जो साधारणतया 17 दिन का होता है। गर्भधारण के 145-150 दिन के अन्दर भेड़ बच्चा पैदा कर देती है। एक बार ब्याने के लगभग 35 दिन बाद भेड़ फिर गर्मी में आ सकती है और उसके बाद उसका उपरोक्त ऋतु चक्र चालू हो जाता है। हमारे यहाँ की भेड़ें लगातार साल भर गर्मी में आती रहती है और किसी भी समय बच्चे पैदा कर सकती हैं।

प्रजनन हेतु मेंडों का चयन

(1) अपनी रेवड़ के लिए अच्छी नस्ल का मेंडा चुन लें जिसमें उस नस्ल के सभी गुण हों।

(2) मेंडा स्वस्थ और शक्तिशाली तथा उसका शरीर सुगठित होना चाहिए।

(3) मेंडे के प्रजनन अंग पूर्ण विकसित होने चाहिए। यदि संभव हो तो गर्मी में आयी भेड़ के साथ छोड़कर मेंडे की संभोग शक्ति की भी परीक्षा कर लें।

भेड़ की प्रजनन क्षमता बढ़ाना

भेड़ की प्रजनन क्षमता को बढ़ाने के दो मुख्य तरीके हैं :—

(1) अच्छा खाना देना।

(2) न्यासर्गिक उपचार।

(1) अच्छा खाना देना : इस विधि को उद्धावन (फ्लशिग) कहते हैं। इस विधि में यदि भेड़ को हम गर्भित करने के छः सप्ताह पूर्व अच्छा प्रोटीनयुक्त दाना या घास खिलाते हैं तो भेड़ की प्रजनन क्षमता बढ़ जाती है। यह तरीका सबसे आसान है। इसके साथ-साथ इसी समय से मेंडों को भी अच्छा पौष्टिक खाद्य खिलाना जरूरी है।

(2) न्यासर्गिक उपचार : इस विधि में पी. एम. एस. नामक न्यासर्ग (हारमोन) की सुई भेड़ के ऋतु काल के तेरहवें दिन देने से न केवल प्रजनन क्षमता ही बढ़ती है वरन एक भेड़ एक ब्यांत में 2 से 3 तक बच्चे पैदा कर सकती है। ऐसा पाया गया है कि प्रत्येक भेड़ से 2 बच्चे ही लेना ज्यादा लाभदायक है क्योंकि दो मेमनों को आसानी से पाला जा सकता है तथा तीन महीने के बाद उनका वजन व वृद्धि की दर एकल उत्पन्न मेमने के समान हो जाती है। परन्तु अभी यह उपचार मंहगा पड़ता है क्योंकि न्यासर्ग काफी कीमती होता है। इसकी कीमत को घटाने के उपाय खोजे जा रहे हैं। आशा है कि भविष्य में यह उपयोगी सिद्ध होगा।

प्रजनन योग्य मेंडों की देख-रेख

(1) मेंडों की प्रजनन शक्ति को बनाये रखने लिए यह आवश्यक है कि इनको वांदित मौसम में ही भेड़ों से मिलने दिया जाय।

(2) प्रत्येक 50 स्वस्थ भेड़ों के पीछे एक स्वस्थ मेंडा अपने रेवड़ में रखें।

(3) संभोग काल में मेंडों को 200 ग्राम की दर से दाना देने से इनका स्वास्थ्य ठीक रहता है।

(4) अनियमित प्रजनन रोकने के लिए नर मैमनों को दूध छोड़ने की अवस्था के तुरन्त बाद वधिया करावें।

गर्भवती भेड़ों की व्यवस्था :

(1) ग्याभिन भेड़ों को एक जगह पर अधिक संख्या में इकठ्ठा न होने दें।

(2) जहाँ तक सम्भव हो ग्याभिन भेड़ों को संकरे रास्ते से न गुजरने दें तथा खाई या गड्डे के ऊपर से न कूदने दें।

(3) गर्भ काल के अन्तिम माह में भेड़ों को अच्छा व सन्तुलित आहार देने से भेड़ तथा मैमने दोनों का ही स्वास्थ्य ठीक रहता है।
(4) अपने रेवड़ की अनुपयोगी तथा बहुतायत में पाली जाने वाली भेड़ों की छटनी कम से कम एक वर्ष में दो बार करनी आवश्यक है।

मैमनों की छटनी :

मैमनों में जब निशान लगाये जाते हैं उस समय छटनी करने में बहुत आसानी रहती है। निम्नलिखित लक्ष्यों वाले मैमनों की छटनी कर देनी चाहिए :—

(1) रंगीन तथा धब्बेदार ऊन वाले।
(2) रेवड़ की नस्ल से भिन्न।
(3) रोगग्रस्त जिनका इलाज संभव न हों।

मादा भेड़ों की छटनी :

मादा भेड़ों के निष्कासन का उचित समय है गर्भाधान से एक वर्ष पूर्व। निम्न प्रकार की भेड़ों को रेवड़ से अलग कर दें :—

(1) जिसने लगातार पिछले दो वर्षों में कोई बच्चा न दिया हो।
(2) जो मैमनों को दूध न पिला सके।
(3) जिनकी उम्र 6 वर्ष से अधिक हो।
(4) जिनकी ऊन की उत्पादन क्षमता कम एवं ऊन का स्तर नीचा हों।
(5) जिसके नीचे वाले दांत दोषयुक्त हों।
(6) जिसके कन्धों के पीछे गड्ढा पड़ता हों।
(7) जिसके पैर फटे हुए हों या जिनके पिछले घुटने टकराते हों।
(8) जिसके कन्धे या कूल्हे सिकुड़े हुए हों।
(9) जिसके जबड़े अन्य भेड़ों की तुलना में लम्बे अथवा अधिक छोटे हों।
(10) जो कमजोर या निर्बल हों।

नर मेंडों की छटनी :

ऐसे मेंडों को भी छांटकर अलग कर दें तथा संभोग कार्य के लिए उपयोग में न लायें—

(1) जो संभोग क्रिया के अयोग्य हों।
(2) जिनकी उम्र पांच वर्ष या उससे अधिक हों।

(3) जिनकी ऊन उत्पादन क्षमता उस मौसम के समस्त भेड़ों की औसत उत्पादन क्षमता से कम हों।

(4) जिनका स्थान उस नस्ल के मेंडों के माप-मान से नीचा हों।

भेड़ों के प्रमुख रोग :

(1) शाकाणु बैक्टीरिया) रोग—फड़का, गलघोंट्र, अधिक खाने से बीमारी तथा हांफड़ा।

(2) विपाणु (वाइरस) रोग—भेड़ की माता, मुंह तथा खुर की बीमारी तथा दस्तों की बीमारी।

(3) आन्तरिक परजीवी—पेट के कीड़े, कलेजे के कीड़े तथा पोलिया।

(4) बाह्य परजीवी—जूं, चींचड़, खुजली तथा बाह्य घाव।

शाकाणु (बैक्टीरिया रोग)

(क) फड़का (ब्लैक लैग)—भेड़ों की यह बीमारी वर्षा के मौसम में होती है। इसमें भेड़ को तेज बुखार होता है, वह चल नहीं सकती तथा अन्त में मर जाती है। बीमार जानवरों को अलग रखें तथा मरे हुए जानवरों को जला दें या गहरे गाढ़ दें। इलाज के लिए पशु चिकित्सक से सलाह लेकर सीरम की सुई लगवा लें।

(ख) गल घोंट्र (हीमोरैजिक सेप्टीसीमिया)—यह रोग भी वर्षा ऋतु में ही होता है। भेड़ को तेज बुखार चढ़ता है तथा पांच-छः घन्टों में ही गला सूज कर मर जाती है। बीमार भेड़ों को स्वस्थ भेड़ों से अलग कर दें तथा बीमार भेड़ों को सीरम की सुई लगवा लें। स्वस्थ भेड़ों को इस रोग से बचाने के लिए निरोधक टीका अवश्य लगवा लें।

(ग) अधिक खाने से बीमारी (ऐन्टैरोटोक्सीमिया)—यह रोग 5-6 महीने के मेमनों में अधिक खाने के कारण होता है। इसमें मेमनों को तेज बुखार आता है, वे चल नहीं सकते, दस्त लग जाते हैं तथा थोड़े ही समय में उनकी मृत्यु हो जाती है। सर्व प्रथम बीमार मेमनों का खाना कम कर देना चाहिए तथा तदोपरान्त टैरामाइसिन की सुई लगवानी चाहिए। बचाव के लिए 5-6 सप्ताह की उम्र में निरोधक टीका लगवाना आवश्यक है।

(घ) हांफड़ा (निमोनिया)—इस रोग में भेड़ की सांस लेने की क्रिया अत्यधिक तेज हो जाती है। इससे बचने के लिए भेड़ को पानी में भीगने से तथा

ठण्ड से बचाना चाहिए। बीमार भेड़ों को टैरामाइसिन की सुई लगवानी चाहिए।

विषाणु (वाइरस) रोग

(1) भेड़ को माता (सीप पोक्स)—इस बीमारी में भेड़ को बहुत तेज बुखार आता है तथा शरीर पर दाने दिखाई देते हैं। यह बहुत ही घातक रोग है। इस बीमारी के इलाज की अपेक्षा बचाव अधिक जरूरी है। प्रत्येक वर्ष इसके निरोधक टीके लगवाना आवश्यक है। बीमारी फैलने पर बीमार जानवरों को अलग रखना चाहिए। बुखार को कम करने के लिए टैरामाइसिन की सुई लगवानी चाहिए।

(2) मुँह तथा खुर की बीमारी (फुट एण्ड माउथ डिजिज)—यद्यपि इस बीमारी से बहुत अधिक भेड़ें नहीं मरती परन्तु फिर भी यह बीमारी भेड़ पालकों को बहुत नुकसान पहुंचाती है। इसमें ग्याभन भेड़ें बच्चे गिरा देती हैं तथा बाकी भेड़ें अत्यधिक कमजोर हो जाती है। इससे बचाव के लिए अभी एक निरोधक टीके का आरम्भ हुआ है। खुरों में फिनायल में तेल मिलाकर लगाने से घाव ठीक हो जाते हैं तथा कीड़े नहीं पड़ते।

(3) दस्तों की बीमारी (रिन्डरपेस्ट)—इस बीमारी से बचाव का टीका प्रत्येक वर्ष लगवाना चाहिए। बीमार भेड़ों को सल्फामीजेथिन की सुई लगवानी चाहिए।

आन्तरिक परजीवी रोग

(क) पेट की कीड़े (कामन वर्म)—इसी बीमारी से भेड़ों को बचाने का सबसे आसान तरीका है कि हर दो सप्ताह बाद चारागाह बदल दिया जाय। इसके अतिरिक्त प्रत्येक भेड़ को 1 ग्राम की दर से निलबर्म नामक दवा पिलाने से सभी प्रकार के कीड़े मर जाते हैं। इस दवाई को एक वर्ष में तीन बार सभी भेड़ों को देना चाहिए। प्रथम बार अप्रेल के महीने में, दूसरी बार जुलाई के महीने में तथा तीसरी बार अक्टूबर के महीने में।

(ख) कलेजी के कीड़े (लीवर फ्लूक)—जिन चारागाहों पर शंख पाये जाते हैं वहाँ से यह कीड़ा भेड़ की कलेजी में प्रवेश करता है। यह भेड़ के कलेजे को नष्ट कर देता है। इसके लक्षण हैं जबड़े के नीचे सूजन आ

जाना। एक मिलीलीटर कार्बन टेट्राक्लोराइड प्रति भेड़ की दर से इस बीमारी की सबसे अच्छी दवा है। चार सप्ताह के बाद दूसरी खुराक से भेड़ पूरी तरह से ठीक हो जाती है।

(ग) पीलिया (बेबीसियसिस)—इस बीमारी में भेड़ को बहुत तेज बुखार आता है तथा खून के रंग जैसा लाल पेशाब आने लगता है। पिछली टांगों से चलने में असमर्थ रहती है तथा 4 से 6 दिन में मौत हो जाती है। इस बीमारी के लक्षण नजर आते ही चारागाह तथा पानी पीने का स्थान बदल देना चाहिए। बीमार भेड़ों को बेबीसान या ट्राईपैन ब्लू सुई लगवानी चाहिए।

बाह्य परजीवी

(क) चीचड़े भेड़ का रक्त चूस कर उसे कमजोर बना देते हैं तथा खाज (खुजली) की बीमारी पैदा कर देते हैं। इस रोग से ग्रस्त भेड़ों को ऊन काटकर लिन्डेन नामक दवा का 0.05 प्रतिशत घोल भेड़ के शरीर पर ब्रुश से लगाना चाहिए। इस दवा के एक बार लगाने से ही यह रोग समाप्त हो जाता है।

(ख) ब्लो फ्लाईज—एक ऐसी मकड़ियों का समूह है जिसके शिशु (कीड़े) भेड़ की खाल में पलते हैं तथा उसमें अनेक घाव पैदा कर देते हैं। एक चम्मच फिनायल में दो चम्मच तेल मिला कर लगाने से ये कीड़े समाप्त हो जाते हैं।

लेखक : जे. पी. मित्तल सम्पादित : लक्ष्मण गोयल
प्रकाशित : सूचना एवं प्रसार खण्ड, के.म.अ.सं., जोधपुर
मुद्रक : जितेन्द्र प्रिण्टर्स, जोधपुर